Vipreet Pratyangira

श्री विपरीत प्रत्यंगिरा (सामान्य विधान)

यदि शत्रु निरंतर आप पर अभिचारिक कर्म कर रहा हो, निरंतर किसी न किसी रूप में आपको आर्थिक, मानसिक, सामाजिक, शारिरिक क्षति पहुंचा रहा हो और आपके भविष्य को चौपट कर रहा हो, तब भद्रकाली के इस स्वरूप, अर्थात विपरीत प्रत्यंगिरा का आश्रय लेना सर्वोत्तम उपाय है। जिस दिन से साधक इस महाविधा का प्रयोग आरम्भ करता है, उसी दिन से ही भगवती भद्र काली उसकी सुरक्षा करने लगती हैं और शत्रु द्वारा किये गये अभिचाारिक कर्म दोगुने वेग से उसी पर लौटकर अपना प्रहार करते हैं। इसके अतिरिक्त राजकीय बाधा, अरिष्ट ग्रह बाधा निवारण में तथा अपना खोया हुआ पद, आस्तित्व ओर गरिमा प्राप्ति में भी यह विद्या सर्वोत्तम मानी जाती है। साधक की आयु, यश तथा तेज की वृद्धि करने में भी यह विद्या बहुत उत्तम मानी जाती है।

ध्यान

खड्गं कपालं डमरू त्रिशूलं,
सम्बिभ्रती चन्द्रकला वतंसा।
पिंगोर्ध्व-केशो-असित- भीम-दंष्ट्रा,

भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली।।

अर्थः- खडग, कपाल, डमरू तथा त्रिशूल धारण करने वाली देवी भद्र काली, जिनके मस्तक में चंद्रकला सुशोभित है, जिनके केश पीले तथा उपर को उठे हुए हैं और जिनके दांत बहुत ही भयंकर तथा असित रंग के हैं, वे मेरा कल्याण करें।

मंत्र-विधान

विनियोगः- अपने दायें हाथ में जल लेकर निम्नलिखित विनियोग पढ़ें :-

ॐ **अस्य श्री विपरीत-प्रत्यंगिरा मंत्रस्य भैरव-ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्री विपरीत प्रत्यंगिरा देवता, ममाभिष्ट सिद्धयर्थे जपे पाठे च विनियोगः।**

विनियोग पढ़कर हाथ में लिया हुआ जल भूमि पर छोड़ दें। इसके बाद न्यास करें,यथा-

करन्यासः-

ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। बोलकर अपने दोनों अगूंठों का स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। बोलकर दोनों अंगूठों की बगलवाली उंगली का स्पर्श करें।

ॐ श्री मध्यमाभ्यां नमः।.......बीच की उंगली को छुएं।

ॐ **प्रत्यंगिरे अनामिकाभ्यां नमः।**... रिंग फिंगर को छुएं।

ॐ **मां रक्ष-रक्ष कनिष्ठिकाभ्यां नमः।**..... सबसे छोटी उंगली को छुएं।

ॐ मम शत्रून भंजय-भंजय करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः। से पहले दोनों हाथों की हथेलियों को आपस में मिलाएं फिर उनके पिछले भागों का स्पर्श करें।

इसी प्रकार हृदय आदि न्यास करें-

ॐ ऐं हृदयाय नमः। बोलकर हृदय का स्पर्श करें।
ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।....सिर का स्पर्श करें।
ॐ श्री शिखायै वषट्। ...शिखा ....।
ॐ प्रत्यंगिरे कवचाय हुं।...दोनों हाथों के क्रास वाईज कंधों का स्पर्श करें।
ॐ मां रक्ष-रक्ष नेत्र-त्रयाय वौषट्।....नेत्रों का स्पर्श करें।
ॐ मम शत्रून भंजय-भंजय अस्त्राय फट्।...दाहिने हाथ की तर्जनी और मध्यमा उंगली से बायें हाथ की हथेली पर तीन बार ताली बजायें।

दिग्बंधः- (अपनी देह की रक्षा हेतु दिशाओं का बंधन करना होता है। इसके लिए निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए दशों दिशाओं में चुटकी बजाएं।)
मंत्रः- ॐ भूर्भुव स्वः ।
इसके उपरान्त भगवती प्रत्यंगिरा के मूल मंत्र का जप करें।

मूल मंत्रः- "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यंगिरे मां रक्ष-रक्ष मम शत्रून् भंजय-भंजय फे हुं फट् स्वाहा।"

एक बार पुनः भगवती का ध्यान करके मंत्र जप करना चाहिए।

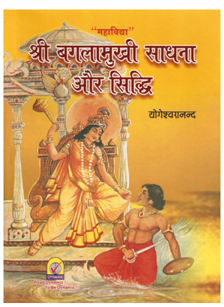


About The Author

Name :- **Shri Yogeshwaranand Ji**
Mb :- **+919917325788**
Email ;- **shaktisadhna@yahoo.com**

Some Of the Books Written By Shri Yogeshwarnand Ji

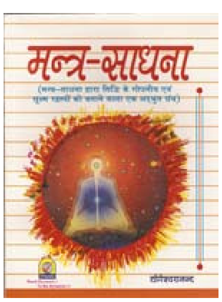
1. Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi



Download

http://www.scribd.com/doc/10935894/Baglamukhi-Sadhna-Aur-Siddhi

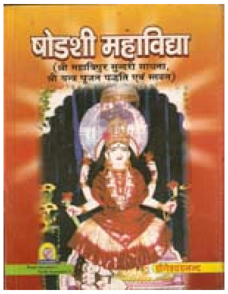
2. **Mantra Sadhna**



Download

http://www.scribd.com/doc/12594252/Mantra

3. **Shodashi Mahavidya**



Download

http://www.scribd.com/doc/16314718/tripursundari-sadhna